चौखट की धूल | By Ishrat Jahan

खाट में फूलों सा फूल जाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ
जैसे ही चौखट की धुल पाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ

मन को भाति हैं सीढ़ी वो तेरह
पहली पे होता दूर अँधेरा
मांगू मैं कैसे बिन मांगे मिलता
मुरझाया मन ये फूलों सा खिलता
सबको तेरे जैकारो में मशगूल पाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ

तीसरी सीढ़ी सबसे है न्यारी
चौथी ने मेरी किस्मत सँवारी
पांचवी सीढ़ी पे जैसे आई कानो में मुरली की धुन सुनाई
दुखों में जब खुद को कूल पाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ

सातवीं सीढ़ी जब आगे आये
धड़कन दिलों की बढ़ती ही जाए
आठवीं मन की आस जगाये दरसन सांवरिया जल्दी दिखाए
और नवी सीढ़ी पर जाते ही
जब सारी बातों को फ़िज़ूल पाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ

दस और ग्यारह पे हो खेल सारा
आँखों का बदले पल में नज़ारा
बारह की छोडो समझो क्या तेरह
ठाकुर करे सीधे दिल में बसेरा
जब दिल से कर उसको क़ुबूल पाती हूँ
जाने क्या होता है सब कुछ भूल जाती हूँ

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a5%8c%e0%a4%96%e0%a4%9f-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%a7%e0%a5%82%e0%a4%b2-by-ishrat-jahan/